"बिजनेस पोस्ट के अन्तर्गत डाक शुल्क के नगद भुगतान (बिना डाक टिकट) के प्रेषण हेतु अनुमत. क्रमांक जी. 2-22-छत्तीसगढ़ गजट/38 सि. से. भिलाई, दिनांक 30-5-2001."

पंजीयन क्रमांक "छत्तीसगढ़/दुर्ग/सी. ओ./रायपुर/17/2002."

# छत्तीसगढ़ राजपत्र

## प्राधिकार से प्रकाशित

क्रमांक 37 ] रायपुर, शुक्रवार, दिनांक 10 सितम्बर, 2004—भाद्र 19, शक 1926

## भाग 3 ( 1 )

### विविध

### न्यायालयों की सूचनाएं

#### न्यायालय, अनुविभागीय अधिकारी एवं रजिस्ट्रार सार्वजनिक न्यास, जांजगीर

जांजगीर, दिनांक 1 सितम्बर 2004

[ छ. ग. लोक न्यास अधिनियम, 1951 ( 1951 का 30) और मध्यप्रदेश लोक न्यास नियम, 1962 के नियम 5 (1) के द्वारा ]

लोक न्यासों के पंजीयक रजिस्ट्रार सार्वजनिक न्यास एवं अनुविभागीय अधिकारी जांजगीर के समक्ष

क्रमांक 1525/वा-2/अ.वि.अ./2004.—यत: कि राधे थवाईत, अध्यक्ष मां मनका दाई सेवा समिति खोखरा तहसील जांजगीर ने छ. ग. लोक न्यास अधिनियम, 1951 (1951 का 30) की धारा 4 के अंतर्गत एक आवेदन अनुसूची में विनिर्दिष्ट संपत्ति के लिए लोक न्यास के रूप में पंजीकृत किए जाने के लिए आवेदन किया है, एतद्द्वारा सूचना दिया जाता है कि कथित आवेदन पर 18-10-2004 को मेरे न्यायालय में विचार लिया जाएगा.

किसी आपत्ति या सुझाव को करने का आशय रखते हुए कथित न्यास या संपत्ति में हितबद्ध कोई व्यक्ति को इस सूचना पत्र के प्रकाशन की तारीख से एक माह के भीतर दो प्रतियों में लिखित कथन प्रस्तुत करना चाहिए और मेरे समक्ष उपरोक्त तारीख पर या तो व्यक्तिश: अथवा प्लीडर या अभिकर्त्ता

के माध्यम से उपस्थित होना चाहिए. उपरोक्त अवधि के अवसान के उपरांत प्राप्त आपत्तियों को विचार में नहीं लिया जाएगा.

अनुसूची

(लोक न्यास का नाम और पता व संपत्ति का विवरण)

न्यास का नाम व पता - मां मनका दाई सेवा समिति, खोखरा जिला जांजगीर-चांपा.

अचल संपत्ति - 1. मंदिर परिसर ज्योति कलश गृह, जो मंदिर के सामने व पीछे स्थित है. कलामंच, उपरोक्त सभी निर्माण ग्राम खोखरा की भूमि ख. नं. 1080 रकबा 1.91 पर स्थित है.

2. सामुदायिक भवन.

चल संपत्ति - 1. गणेश जी की मूर्ति
2. मां मनका दाई के श्रृंगार के जेवरात
3. घंटी और पूजा की सामग्री में उपयोग के वर्तन
4. पंखे, लाइट.

आर. के. एक्का,
अनुविभागीय अधिकारी एवं रजिस्ट्रार.

संचालक, मुद्रण तथा लेखन सामग्री, छत्तीसगढ़ द्वारा शासकीय क्षेत्रीय मुद्रणालय, राजनांदगांव से मुद्रित तथा प्रकाशित—2004.